eISSN 3049-2610

RESEARCH STREAM

A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal

Volume 02, Issue 02, October 2025

आदिवासी नारी के बदलते आयाम

डॉ0 सुमति सिंह[1]

[1]प्रतापगढ, उ0प्र0

Received: 21 Oct 2025. Accepted & Reviewed: 25 Oct 2025, Published: 31 Oct 2025

Abstract

आदिवासी नारी भारतीय समाज का एक महत्वपूर्ण किन्तु लंबे समय तक उपेक्षित हिस्सा रही है। परंपरागत रूप से आदिवासी महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक भूमिकाएँ अत्यंत सशक्त रही हैं, जहाँ वे परिवार और समुदाय की संरचना में केंद्रीय स्थान रखती थीं। किन्तु वैश्वीकरण, आधुनिकीकरण, शिक्षा के प्रसार तथा सरकारी नीतियों के प्रभाव से आदिवासी नारी के जीवन में व्यापक परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। वर्तमान समय में आदिवासी महिलाएँ शिक्षा, स्वास्थ्य, राजनीति, रोजगार और सामाजिक नेतृत्व के क्षेत्रों में सक्रिय भागीदारी निभा रही हैं। इसके साथ ही वे अपने पारंपरिक ज्ञान, सांस्कृतिक विरासत और पर्यावरण संरक्षण में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। हालांकि, इन सकारात्मक परिवर्तनों के बावजूद उन्हें अभी भी गरीबी, अशिक्षा, लैंगिक भेदभाव, विस्थापन तथा सांस्कृतिक क्षरण जैसी अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। अतः आदिवासी नारी के बदलते आयामों का अध्ययन न केवल उनके सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण है, बल्कि समावेशी विकास की अवधारणा को भी सुदृढ़ करता है।

मुख्य शब्द– आदिवासी नारी, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक परिवर्तन, शिक्षा एवं जागरूकता, आर्थिक भागीदारी, सांस्कृतिक पहचान, वैश्वीकरण, लैंगिक समानता

Introduction

आधुनिक वैज्ञानिक और तकनीकी विकास के परिणामस्वरूप आये परिवर्तनों से आदिवासी स्त्री भी वंचित नही रही है। बदलते परिवेश में आदि वासी महिला में भी परिवर्तन आया है। शिक्षा के प्रचार के कारण देश और समाज में आये नवीन परिवर्तनों ने आदिवासी नारी की जीवनशैली और जीवन दृष्टि को सर्वथा नर्वाण आयाम प्रदान किया है। नारी सृष्टि का आधार मानी जाती है। किसी भी देश की आधी आबादी स्त्री है। यदि देश की आधी आबादी अर्थात् स्वी को घूर की चारदीवारी के अन्दर बन्द कर दिया जायेगा तो देश की प्रगति भी आधी रह जायेगी। स्त्री के बिना राष्ट्र की उन्नति सम्भव नहीं है। जिस राष्ट्र में स्त्री की स्वाभिमान की रक्षा नहीं होगी, वहाँ उन्नति नहीं होगी। स्त्री का केवल स्वतन्तु होकर निर्णय लेना या आर्थिक रूप से स्वतंत्र जाना ही उसकी अस्मिता नहीं है । स्त्री अस्मिता का अर्थ है, स्त्री के प्रति समाज के दृष्टिकोण और मानसिकता में बदलाव, जिसमें स्त्री का इनयं का दृष्टिकोण सुम्मिलित हो। शनैः–शनैरू इसमें बदलाव आ रहा है। आधुनिकता का प्रभाव स्त्री पर भी परिलक्षित होने लगा है। आदिवासी महिलाएँ अब अपने अधिकार पहचानने लगी हैं। वह किसी से भी ठगना नहीं चाहती। वह अपना अधिकार चाहती है। अब वह मजदूरी करने भी जाती है तो निडर होकर।

रमणिका गुप्ता के कहानी संग्रह लहूदृजुटाई की परबतिया भी अब किसी से नहीं डरती। ″मजदूर उसकी बहादुरी का लोहा मानने लगे थे। जब वह मजदूरों के मामले लेकर प्रायः हर रोज ठीकेदार बाबू से भी झगड़ने लगी थी। मजदूरों ने परबतिया को अपना लीडर चुन लिया। उन दिनों ठीकेदारों के खिलाफ़

© RESEARCH STREAM JOURNAL, 2025

eISSN 3049-2610
RESEARCH STREAM
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 02, Issue 02, October 2025

केदला में हड़तालों का जोर था। यूनियन के साझा नेहूत्व में मजदूर, लठैतो—पहलवानों का मुकाबला करते हुए कुछ कर गुजरने पर उतारू थे। वे ईंट का जबाब पत्थर से देने के लिए तैयार थे। परबतिया इन सब में सबसे आगे रहती थी। वह मर्दों के दंगल की सरदारिन बन गयी, और यूनियन में अपनी पोखरी की प्रति निधि।

आदिवासी नारी घर की चारदीवारी में बन्द नहीं रहती। वह पुरुषों के बराबर काम करती है। आधुनिक समय में आदिवासी स्ती प्रत्येक क्षेत्र में कार्य कर रही है। जैसे परबतिया सबकी सरदारिन बन गयी थी। आदिवासी नारी समाज के बहानों हो बंधी रहती है। रमणिका गुप्ता के 'सीता—मौसी' उपन्यास, में सीता के बारे में बताया हैदृ" सीता के गांव वाले सब रुष्ट हो गये। उन्होंने आदिवासी तरीके से बिरादरी बुलाकर उसे मरा घोषित कर, भोज—भात कर लिया। सीता मुक्त हो गयी बिरादरी से भी, पहले पति से भी और पुराने रूढ़ियों से भी। वह अब खटती थी।" सीता जैसी स्त्री अभी भी समाज के अत्याचार का शिकार हो रही है।उसका पति दूसरी शादी करके चला गया है। उससे सीता को एक बच्चा है पहला पति तो अपनी जिम्मेदारी से मुँह मोड़ उसे छोड़ चला गया। ऐसे में सीदा एक मुसलमान यासीन से विवाह कर लेती है। जो जो उसके बच्चे की जिम्मेदारी भी उठाता है। आदिवासी महिला को समाज की परवाह किए बिना आगे बढ़ना होगा। समाज के पुराने बन्धनों से आजाद होना होगा। तभी वह चौन से जी सकती है। अब समय बदल रहा है। लोगों की सोच बदल रही है। आदिवासी महिलाओं के प्रति लोगों का नजरिया बदल रहा है। मधु कांकरिया के 'खुले गगन के लाल सितारे', में, मणि इन्द्र की बातों के बारे में सोचती है। "बडेदृबड़े शहरों में जो दिखता ही उसे ही सच मानकर नहीं बैठ जाओ....अब समाज बदल रहा है। लोगों की सोच बदल रही है.... आने वाले समय में तुम देखना, खेतों में पसीना बहानी एक जीवन की लड़ाई स्त्रियाँ ही सुन्दर कहलायेंगी। सुन्दर वह हर कोई जो अपने श्रम, ऊर्जा से और आत्मिक सौन्दर्य से दूसरों के संसार को भी सुन्दर बनाए।" जैसे—जैसे समय आगे बढ़ रहा है, लोगों की सोच में भी परिवर्तन आता जा रहा है। आदिवासीं नाड़ियों पर इसका प्रभाव विशेषकर, हो रहा है। जो काम उन्हें अच्छे से नहीं लगते थे, वही काम, अब वे बड़े चाव से करती है।

आदिवासी समाज में लड़कियों के जन्म पर खुशियाँ नहीं मनाई जाती है। लड़कादृलड़की में फर्क किया जाता है, लेकिन पुनी सिंह के 'सराहना' उपन्यास की अंजनी काकी एक शहरी सरदारिन के सम्पर्क में आकर अपनी सोच को बदल लेती है और, अपनी पोती के जन्म पर खुशियाँ मनाती है। पुनी सिंह ने इसका रोचक वर्णन किया हैदृ"अन्जनी काठी ने सहराने की लीक तोड़ दी थी । सहराने में पहली बार किसी लड़की के होने पर ढ़पला बजा था। इस काम के लिए सहराने के बूढ़ों ने जाहा अजनी काकी का दबे स्वर में विरोध किया वही कुछ महिलाओं मे काकी के इस काम की सराहभी। चम्पा को यह देखकर कि उसकी लड़की के पैदा होने पर ऐसी खुशी मनाई जा रही है, बेहद खुशी हुई थी। काकी के प्रति उसका आदर—भाव सवाया हो चला था।"

"काकी के मन में लड़कियों के प्रति ऐसे उदार विचार हमेशा से नहीं थे अभी कुछ साल से घाटी से एक अन्य दबंग महिला से उसका सम्पर्क हुआ था। वह महिला है सरदार लखन सिंह की माँ। उसको सबलोग प्यारे से मम्मी कहते हैं। मम्मी का आना जाना इधर के सहरानों में अक्सर होता है। नये सहरानों में वह ज्यादा आती हैं। जब वह आति हैं तो उनके साथ एक—दो उनकी नेशन भी रही हैं। वे लड़कियाँ

eISSN 3049-2610
RESEARCH STREAM
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 02, Issue 02, October 2025

अपनी दादी के साथ जिस तरह से खुश रहती हैं और दादी उनके साथ जिस तरह से स्नेहपूर्ण व्यवहार करती हैं, वह इधर घाटी की। जिन्दगी में दुर्लभ है। मम्मी और उनकी नतीनों को जो भी देखता है उसे प्रेरणा जरूर मिलती है। उसी से काकी के विचार बदले हैं।

वर्तमान समय में सांस्कृतिक निखण्डक हो रहा है। आदिवासी स्त्रियाँ शहरी महिलाओं के सम्पर्क आने पर उनका जैसे बर्तन करने लगती हैं। शहरी सभ्यता को अपनाने लगी हैं। मैत्रीयी पुष्पा के 'सलानट' उपन्यास में शीलों की सास शहरी मेहिलाओ पर क्रोध करते हुए बोलती ही हैदृ

"इसु गाँव में भी शहरी औरतें ने आ दृ आ करके बवाल मचा दिया है। नहीं तो हमारे घर ल होती है? आग लगे, में भी, होई कर बैठी। काए–काएं की होड़ दृ संग करूंगी? वे तो अपने आदमी को ऐसे नाम लेकर बुलाती है जैसे किसी बच्चा को, टेर रही हो।" एक आदिवासी नारी को ऐसा कहना अटपटा जरूर लगता होगा लेकिन धीरे धीरे आधुनिकता का प्रभाव उस पर भी हो रहा है।"

आदिवासी स्त्रियाँ अब खेत खलिहानों, से निकलकर फैक्टिरियों में काम करने लगी हैं। फैक्टरियों में काम में आगे होने के साथ साथ वह आन्दोलनों में भी भाग लेने लगी हैं। आदिवासी जंगलों में निवास करते हैं। अब इन जंगलों पर, पूँजीपतियों की आंखे जमगयी हैं। इन हि दिकुओं के प्रवेश से आदिवासियों में सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन होने लगे हैं इनके सम्पर्क में आने से आदिवासी अपनी मौलिकता खोते जा रहे हैं। इनके रीति–रिवाजों और । संस्कारों का अब घाल मेल शुरू हो गया है।

आदिवासी महिलाओं का एक बड़ा वर्ग पलायन करने को विवश है, ये दिल्ली, मुम्बई, कलकता जैसे महानगरों में दायी, आया का काम करती हैं। ईंट भटठों में मजदूरी करती हैं। इन स्थानों पर इनका शारीरिक एवं मानसिक शोषण होता है। आदिवासी महिलाओं को अब यह समझ में आने लगा है, कि शिक्षा के अभाव में ये आगे नहीं बढ़ सकती हैं। इसलिए अब ये अपने बच्चों को पढ़ने के लिए शहर भेजने लगी हैं, जिससे आने वाले समय में इनको परेशानियों का सामना न करना पड़े। जमाने के बदलने के साथ–साथ इनमें भी परिवर्तन होने लगे है। विभिन्न क्षेत्रों में महिलाएं पुरुष से बराबरी के अधिकार के साथ अपनी गिनती कराने लगी हैं। दफ्तरों में, उद्योगो में, शिक्षण संस्थानों में और सार्वजनिक समाज सेवा तथा राजनीति में भी उनकी स्थिति उत्साह वर्द्धक है।

महाश्वेता देवी की कहानी 'इतना मुंडा ने लड़ाई जीती' मे आलोमणि बताती है कि "जब हम बच्चे थे तब कहाँ थे आज की तरह स्कूल। आज तो लड़कियाँ भी स्कूल जाने लगी हैं मेरे भाई ने तो अपनी लुड़की को शहर के स्कूल में पढ़ने को भेज दिया है। वह वहीं रहेंगी भी।" आदिवासियों के लिए पढ़ना–लिखना बहुत जरूरी है। ये अब जानने लगे हैं। जिससे इन आदिवासियों के लिए भोलेपन का कोई फायदा न उठा सके। कैसी भी मुश्किलें आए इनको पढ़ना जरूर चाहिए। यह बहुत ही दुख की बात है,की अधिकांश बच्चे पड़ने नहीं जाते और जो जाते हैं, वे ठीक ढंग से पढ़ नहीं पाते। अब आदिवासी समाज में भी स्त्रियाँ बुद्धिजीवी, प्रोफेसर, व्याख्याता शिक्षक लेखक आदि बनने लगी है हैं। समय के साथ–साथ महिलाएँ जागरूक हो गई हैं। उन्होने उन्होंने सफलता की सीढ़ियाँ चढ़कर कीर्ति अर्जित की हैं। आदिवासी महिला को स्वयं अपने हक के लिए लड़ना होगा। स्वयं नेतृत्व करना होगा। स्त्री यदि जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहती है तो उसे छुई–मुई नाजुक, शर्माली, त्यागमयी, तपस्विनी सती साध्वी की भंगिया तोड़कर उपभोक्ता सामग्री सी बाजार में बिकाऊ वस्तु की तरह चकाचौंध भरी, मोहक दुनिया नकारकर दृ

eISSN 3049-2610
RESEARCH STREAM
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 02, Issue 02, October 2025

एक मेहनत करा, अन्याय न सहने वाली, स्वावलम्बी, स्वतंत्र एवं आत्मनिर्भर और अपने प्रजातांत्रिक अधिकारों का उपभोग करने वाली नारी की भूमिका अदा करनी होगी। तभी उसे अपने समस्त अधिकार प्राप्त हो सकते हैं।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात सरकार ने आदि रासियों में सुधार तथा उनकी समस्याओं के निराकरण के लिए विभिन्न योजनाएं बनायीं। उनमें से एक है उनमें से एक है, आदिवासी कल्याण परिषद। प्रारम्भ से ही आदि वासियों की स्थिति मे सुधार के लिए संस्थाएं अपना योगदान देती आ रहीं हैं। आदिवासी समाज में अनेक विभिन्नताएं होती हैं, तथा इस सांस्कृतिक व सामाजिक विभिन्नता के कारण इनके लिए एक जैसी योजनाएं सही नहीं होती है। आदिवासियों के विकास सर्वप्रथम पहल ईसाई मिशनरियों ने अपने धर्म के प्रचार के लिए की। इन धर्म प्रचारकों ने दुर्गम स्थानों व खराब मौसम की परवाह किए बिना सयं, इन आदिवासियों की सेवा की। इन मिशनरियों ने आदिवासियों से मधुर सम्बन्ध बनाये तथा इन्हें विकास तथा अधिकारों के प्रति जागरूक बनाया। आदिवासी विकास कार्यक्रमों में आदिवासी महिलाओं को अथवा छोड़ दिया है। विकास कार्यक्रमों में महिलाओं की भागीदारी को बढावा देना चाहिए। आदिवासियों के विकास में प्रारम्भ से ही स्वयंसेवी संस्थाएँ अपना योगदान दे रहीं हैं। गुजरात । गुजरात के झावोद मे भारतीय आदिय जाति सेवक संघ ने आदिवासी महिलाओं के लिए प्रशिक्षण केन्द्र खोला, जिससे ये प्राशिक्षित महिलाएँ ग्रामीण तथा आदिवासी क्षेत्रों में बच्चों की कल्याणकारी योजनाओं को लागू करने में मदद करे। आन्ध्र प्रदेश के श्री काललम में आदिवासी की बालिकाओं हेतु एक आदिवासी बालिक आश्रम स्कूल का संचालन किया जा रहा है। यह आश्रम स्कूल में दुर्गम स्थानों से आने वाली बालिकाओं को शिक्षा प्राप्त करने में सफल हुआ है। जागरुक आदिवासी महिलायें ही 'आदिवासी कल्याण परिषद' की योजनाओं का लाभ उठा पाई हैं। सभी स्त्रियों को लाभ हो, इसके लिए स्वयं सेवी संस्थाएं अच्छी तरीके से कार्य करें तथा सभी को यह यह एहसास कराई जाय कि महिलाओं की महत्ता और स्त्री का कल्यान भी देश के विकास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। हजारों वर्षों से या कहूँ सदियों से आदिवासियों को खदेड़ने का काम जारी है। उन्हें जंगलों में आदिम जीवन जीने के लिए विवश कर सभ्यता से दूर रखने की साजिश भी इस बीच होती रही और जारी रहा उनका शोषण व दोहन। उनकी संस्कृति को न तो यहा के वासियों ने पनपने या विकसित होने दिया और न हो, उसे आत्मसात् कर मूलधारा में शामिल होने दिया। उल्टे हमेशा उन पर असभ्य,आदिम या जंगलीपन की पहचान थोपकर, उनमें हीनभावना भरी जाती रही जिससे आदिवासियों पर उनका वर्चस्व कायम रहे। फल स्वरूप आदिवासियों के समाज का विकास ठहरसा गया, सोच का विकास रुक गया और रुक गया उनकी संस्कृति और भाषा का विकास। परम्परा और अन्धविश्वास से जुड़ा यह समाज, बस जीने की चाह के बलू पर कठिन से कठिन परिस्थितियों का अपने कठिन श्रम से मुकाबला करता रहा– दीन दुनिया, से बेखबर द्य लेकिन इन सबके बावजूद उसने अपनी पहचान आदिवासी के रूप में कायम रखी। आदिवासी महिलाओं को शिक्षित करके उनके आने वाले भविष्य को संगारा जा सकता है। इनमें जन–जागृति लाकर, इनमें व्याप्तं बुराइयों से अवगत कराकर इन्हें आगे बढ़ाया जा सकता है। समाजसेवी संगठनों को शहर में अभियान न चलाकर इनकी गाँवो में अभियान चलाना चाहिए। जिसमें इनकी कुप्रथाओं से अवगत कराया जाना चाहिए।

आदिवासी महिलाओं में अशिक्षा के कारण अन्धविश्वास भी बहुत है। इनमें किसी बीमारी के होने पर भूत–प्रेत का प्रकोप माना जाता है और जब तक बीमार व्यक्ति की हालत गम्भीर नहीं हो जाती तब तक

eISSN 3049-2610
RESEARCH STREAM
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 02, Issue 02, October 2025

अस्पताल नहीं ले जाया जाता। बच्चों कीशिक्षा एवं प्रौढ शिक्षा के द्वारा इन अंधविश्वासों को दूर किया जा सकता है। प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों को अक्षर ज्ञान का केन्द्र न बनाकर अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र बनाया जाये, जिससे आदिवासी महिलायें वर्तमान समय से भी परिचित हो सकें और उनका शोषण गैर–आदिवासियों द्वारा न किया जा सके। आदिवासी समाज में बहुदृविवाह की प्रथा प्रचलित है। इस प्रथा को जड़ से समाप्त करने के लिए सरकार को हिन्दू–विवाह कानून के तहत दण्ड देना चाहिए। इस प्रथा पर रोक लगाकर स्त्री को समाज में सम्मानजनक दर्जा दिया जा सकता है। आदिवासी महिलाओं के समग्र विकास के लिए एक प्रारूप बनाना चाहिए। जिसमें महिलाओं की समस्याओं पर ध्यान देना चाहिए। तभी जाकर भविष्य में ये अपना विकास कर सकेंगी। आदिवासी शिक्षकों के लिए अलग से प्रशिक्षण की योजना बनानी चाहिए। स्थानीय आदिवासियों में से ही योग्य व युवा, पढ़ लिखे उम्मीदवारों को चयनित किया जाना चाहिए। अगर इनका अध्यापक आदिवासी होगा तो उनकी समस्याओं का ठीक ढंग से समाज सकेगा। आदिवासी महिलाए जितनी अधिक पढ़ी लिखी होंगी। उतनी अच्छी तरह से वे घर की जिम्मेदारी एवं बच्चों का पालन–पोषण कर सकेंगी। छात्राओं के विद्यालय में एक–दो ऐसे भी होने चाहिए जिसमे, घरेलू जिम्मेदारियों के बारे में जानकारियाँ दी जाया। उच्च स्तर पर पढ़ने की इच्छुक छात्राओं को छावावास उपलब्ध कराया जाये और इन्हें विशेष प्रोत्साहन राशि प्रदान किया जाय, जिससे इनका भविष्य उज्जवल हो सके। रोजगार देने के नाम पर जो बडी योजनाएं बनायी जाय, उनमें आदिवासी महिलाओं की सहभागिता को बढ़ावा जाय, जिससे इन्हे ये महसूस हो कि सरकार हमारे विकास लिए कार्य कर रही है।

स्त्री चाहे निम्न वर्ग की हो, मध्यम वर्ग की हो या उच्च वर्ग की हो अगर वह प्रयास करेगी तो उनकी स्थिति अवश्य सुधरेगी। जिन दायरों में महिला परपरागत परम्पराओं से मुक्त दिखाई देती हैं, वहाँ भी कुछ नयी समस्याओं का उसे सामना पड़ेगा। मेरा मानना है, कि ये समस्याएं परिवर्तन और प्रगति की है और उनसे निराश होने की कोई आवश्यकता नहीं है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि आदिवासी, महिलाओं के विकास के लिए धन खर्च करने के साथ साथ ऐसे समर्पित अधिकारी व कर्मचारियों को सरकार द्वारा चुना जाना चाहिए जो इन स्त्रियों की समस्याओं को सुने और उन समस्याओं का निराकरण करे। आदिवासी स्त्रियों के प्रति सरकार का यह दायित्व है, कि उन्हें न सिर्फ आर्थिक शोषण से बचाया जाय बल्कि उन्हें कार्यस्थल पर किये जा रहे यौन–शोषण से भी बचाया जाय। सरकार इन स्त्रियों को संतुष्टिदायक जीवन जीने के लिए अवसर आत्मनिर्भरता के महत्व का ज्ञान व मागदर्शन दे सकती है। आदिवासी नारी पर आधुनिकता का प्रभाव हो रहा है, वे सभी क्षेत्र में अपने कदम बढ़ा रही है। स्त्री का केवल स्वतन्त्र होकर निर्णय लेना या आर्थिक रूप से स्वतन्त्र हो जाना ही उनकी अस्मिता नहीं है। स्त्री अस्मिता का अर्थ है स्त्री के प्रति समाज के दृष्टिकोण और मानसिकता में बदलाव, जिसमें स्त्री का स्वयं का दृष्टिकोण भी सम्मिलित हो। आदिवासी महिलाओं को शिक्षित करके उनके आने वाले भविष्य को समूचित रूप से संवारा जा सकता है। इनमें जन–जागृति लाकर, इनमें व्याप्त बुराइयो से अवगत कराकर इन्हें आगे बढ़ाया जा सकता है।

‘पगर का कोहरा’ उपन्यास में राकेशकुमार सिंह ने सही कहा है– ये तो तभी सम्भव जब आस्थावान की आस्था और विश्वास को धीरे–धीरे सार्थक, चिन्तन, और, वैज्ञानिक दृष्टिकोण की ओर झुकने को विवशकर दिया जाय। एक तर्कसंगत सोच निर्मित की और इस दीर्घकालीन प्रक्रिया में पूरे धैर्य और सावधानी की जरूरत होती है।

eISSN 3049-2610
RESEARCH STREAM
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 02, Issue 02, October 2025

संदर्भ सूची–

1. रंगणिका गुप्ता, बहू जुठाई दृ शिल्पायन पृ०–74
2. रमणिका गुप्ता, सीता मौसी पृ० दृ 35
3. पुन्नी सिंह, सराहना पृष्ठ संख्या दृ 16
4. रमणिका गुप्ता, बहू जुाई पृष्ठ दृ 79
5. मैलेयी पुष्पा, झूलानट पृष्ठ सं०–145
6. वही पृष्ठ सं0, 65
7. वही पृष्ठ सं० –96
8. नही पृष्ठ सं० 99
9. महाश्वेता देवी, इतना गुंडा ने लड़ाई जीती, पृष्ठ स० दृ 25
10. डॉ0 हरिशचन्द उत्प्रेती, भारतीय जनजातियाँ पृष्ठ स०–329
11. राकेश कुमार सिंह– पठार पर कोहरा पृष्ठ सं०, 142

© RESEARCH STREAM JOURNAL, 2025